2 दिसम्बर 2012, कुल पृष्ठ : 4, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर(प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आध्यात्मिक व्याख्यानमाला सानंद संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर दिनांक 10 से 14 नवम्बर तक श्री पंचपरमेष्ठी पूजन विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार के मोक्ष अधिकार पर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक व समयसार पर, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' द्वारा नियमसार पर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा प्रवचनसार पर, पण्डित दिनेशभाई शहा व डॉ. उज्ज्वलाबेन शहा द्वारा पंचपरावर्तन विषय पर प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 10 नवम्बर को श्री नितिनभाई चिमनलाल शाह के निवास स्थान से मंगल कलश शोभायात्रा प्रारंभ हुई। इस अवसर पर ध्वजारोहण श्रीमती मंजुलाबेन चिमनलाल शाह तथा सुनिताबेन नितिनभाई शाह परिवार द्वारा किया गया।

दिनांक 14 नवम्बर को प्रातः मंगल सुप्रभात फेरी, गुरुदेवश्री का मांगलिक एवं पूजन-विधान का समापन हुआ। समापन समारोह में कहान नगर परिसर में जिनेन्द्र रथयात्रा का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के कुशल निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल एवं उनके सहयोगियों द्वारा संपन्न हुआ।

छात्रों ने किया मंगलायतन का शैक्षिक भ्रमण

श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला हनुमानगंज फिरोजाबाद के छात्र-छात्राओं ने दिनांक 28 अक्टूबर को अलीगढ स्थित तीर्थधाम मंगलायतन व मंगलायतन विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। छात्र-छात्राओं ने दोनों जगह की बारीकियों को ध्यान से देखा और विस्तार से इनके निर्माण से लेकर पूर्ण हुए कार्यों के बारे में जानकारी दी गई।

दिनांक 28 अक्टूबर को प्रातः मंगलायतन में सभी मंदिरों के दर्शन किये, साथ ही मंदिर के चारों ओर तीर्थंकर व अनेक ज्ञानवर्धक चित्रों को ध्यान पूर्वक देखा। दोपहर में सभी छात्रों ने मंगलायतन विश्वविद्यालय देखा। बस में सभी छात्र-छात्राएँ धार्मिक भजनों को गुनगुनाते हुए चल रहे थे, जिससे पूरा माहौल धर्ममय हो गया। पाठशाला संचालक श्रीमती सरोजलता जैन ने बताया कि शैक्षिक भ्रमण के कारण छात्रों का ज्ञानवर्धन तो होता ही है साथ ही अपने आस-पास के धार्मिक क्षेत्रों के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है। इस शैक्षिक भ्रमण में लगभग 100 छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही। मंगलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति सतीशचन्द्र जैन ने कहा कि छात्र-छात्राओं को ऐसे भ्रमण पर लाने से उनमें धर्म की रुचि जागृत होती है। इस भ्रमण में पाठशाला प्रमुख श्री अवनीन्द्र जैन, पाठशाला सहसंचालक श्रीमती पूनम जैन आदि गणमान्य उपस्थित थे। इस अवसर पर फेसबुक व ट्विटर की साईट का भी उद्घाटन किया गया, जिसमें फेसबुक का लिंकअप **www.facebook.com/apnijainpathshala** व ट्विटर का लिंकअप **@pathshalafzd** है।

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ कोहेफिजा में दि.जैन मंदिर में ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा दिनांक 9 से 21 नवम्बर तक दोनों समय प्रवचन हुये।

इस अवसर पर प्रातः प्रवचनसार के ज्ञेयाधिकार एवं सायं नाटक समयसार के गुणस्थानाधिकार के आधार पर प्रवचन हुये। इन प्रवचनों से अनेक साधर्मीजन बहुत प्रभावित हुये एवं भविष्य में भी आने का निमंत्रण दिया।

दिनांक 18 नवम्बर को ब्र. यशपालजी उदयगिरि-विदिशा गये, जहाँ ज्ञाता-ज्ञेय विषय पर प्रवचन हुआ एवं मुमुक्षुओं से विशेष चर्चा भी हुई। वहाँ के प्रमुख लोगों ने भविष्य में आकर प्रवचनों का लाभ प्रदान करने हेतु निमंत्रित किया।

दीपावली पर विचार गोष्ठी

दलपतपुर-सागर (म.प्र.) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रातः महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त भगवान महावीर के सिद्धांतों पर एक विद्वत् विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें अरुण कुमारजी, निकलेशजी शास्त्री, विवेकजी शास्त्री, अनेकान्तजी शास्त्री, समकितजी शास्त्री, आशुतोषजी, विदुषी अनु, संयमजी मोदी, उपाध्याय रेशु, उपाध्याय मेघा, चौ.महेन्द्र कुमारजी, उदयचन्दजी, निरमोलकजी, रुचि सिंघई आदि वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का संयोजन व संचालन निखलेशजी शास्त्री एवं संतोषजी चौधरी ने किया।

सम्पादकीय – 89

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १६०

प्रस्तुत गाथा १६० में निश्चय मोक्षमार्ग के साधन रूप व्यवहार मोक्षमार्ग का निर्देश है। मूल गाथा इसप्रकार है –

धम्मादीसद्दहणं सम्मत्तं णाणमंगपुव्वगदं।
चेट्ठा तवम्हि चरिया ववहारो मोक्खमग्गो त्ति।।१६०।।

(हरिगीत)

धर्मादि की श्रद्धा सुदृग पूर्वांग बोध-सुबोध है।
तप माँहि चेष्टा चरण मिल व्यवहार मुक्तिमार्ग है।।१६०।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि धर्मास्तिकायादि का श्रद्धान सम्यग्दर्शन है, अंगपूर्व सम्बन्धी ज्ञान सम्यग्ज्ञान एवं तप में चेष्टा सम्यक्चारित्र है। इसप्रकार यह व्यवहार मोक्षमार्ग है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र कहते हैं कि सम्यक्दर्शन–ज्ञान–चारित्र मोक्षमार्ग है। छह द्रव्यरूप और नव–पदार्थ रूप जिसके भेद हैं – ऐसे धर्मास्तिकाय आदि की तत्वार्थ प्रतीतिरूप भाव जिसका स्वभाव है, उनका श्रद्धान ही सम्यक्त्व है। तत्वार्थ श्रद्धान के सद्भाव में अंग पूर्वगत विशेषों का जानना ज्ञान है तथा आचारादि सूत्रों द्वारा कहे गये अनेक प्रकार के मुनियों के आचार रूप तप में चेष्टा चारित्र है। ऐसा यह स्व–परहेतुक पर्यायाश्रित भिन्न साध्य–साधन भाव वाले व्यवहारनय के आश्रय से (व्यवहारनय की अपेक्षा से) अनुसरण किया जाने वाला मोक्षमार्ग में एकाग्रता को प्राप्त जीव को अर्थात् जिसका अंतरंग एकाग्र है, समाधि को प्राप्त है – ऐसे जीव को पद–पद पर परम रम्य शुद्ध भूमिकाओं में अभेद रूप स्थिरता उत्पन्न करता है। यद्यपि शुद्ध जीव कथंचित् भिन्न साध्य–साधन भाव के अभाव के कारण स्वयं शुद्धस्वभाव से परिणत होता है, तथापि निश्चय मोक्षमार्ग के साधनपने को प्राप्त होता है।

इसी के भाव को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

धर्मादिक में सुरुचि सो, सम्यक् श्रुत गत ज्ञान।
तपतैं चरजा चरित है, विवहारी सिब जान।।२१०।।

(सवैया इकतीसा)

छहों द्रव्य नवौं पद–विषै श्रद्धा प्रीति रुचि,
आपनी सुमुख होइ सम्यक् लखावना।
तत्वौं की प्रतीति विषै रीत न्यारी–न्यारी लसै,
सोई नाम ग्यान नाना रस का चखावना।।
परतैं विमुख आप विषै जो चरित नाम,
नाना तप धारी मोहचारित नसावना।
सई तीनों विवहार निहचै स्वरूप साधै,
विवहार मोख माहिं इनका रखावना।।२११।।

(दोहा)

साधन निजरूप कै, परम अनूपम जान।
जब निजरूप जग्या विमल, तब इन कहा कहान।।२१२।।
साधन–साधि–अभाव, सुद्ध स्वरूप विषै लसै।
तरली दसा लखाव, भेद–ज्ञान बहु भाँति का।।२१४।।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी ने जो अपने व्याख्यान में कहा, उसका सार यह है कि यह व्यवहार मोक्षमार्ग की व्याख्या है। भगवान ने छह द्रव्य देखें हैं और उनकी दिव्यध्वनि में आये हैं। जिनधर्मी जीवों को आत्मा के आश्रय से सम्यक् श्रद्धा–ज्ञान–चारित्र प्रगट हुए हैं, उन्हें रागरहित आत्मा की ऐसी प्रतीति होती है कि लोक में छह द्रव्य हैं और उनकी श्रद्धा व्यवहार सम्यग्दर्शन है और यद्यपि यह व्यवहार समकित शुभभाव है, पुण्यबंध का कारण है, परन्तु यह सम्यक्त्व की पूर्व भूमिका में होती ही है, होना ही चाहिए। जो ऐसा न माने वह मूढ़ है तथा कहते हैं कि चैतन्य स्वरूप आत्मा राग से जुड़ा है – जिन्हें ऐसी दृष्टि हुई है, उसकी नवतत्त्व की श्रद्धा ही व्यवहार समकित नाम पाती है।

भगवान ने दो नय कहे हैं। वे दोनों नय सच्चे तभी कहलाते हैं, जबकि वह अपने शुद्ध आत्मा को आदरणीय माने तथा व्यवहारनय का विषय जानने योग्य हैं। ऐसा जाने। उसको आत्मवस्तु के आश्रय से वीतरागता प्रगट होती है।

द्वादशांग के ज्ञान को व्यवहार सम्यग्ज्ञान कहते हैं। वर्तमान में द्वादशांग के पूर्ण ज्ञान का तो विच्छेद; किन्तु उन अंगों का थोड़ा सा ज्ञान धरसेनाचार्य आदि को था। उनसे षट्खण्डादि आगमों की रचना हुई। कुन्दकुन्दाचार्य ने समयसार आदि ग्रन्थों की रचना की, उनमें भी अंगों का अंश ही है।

जो ज्ञान आत्मा के आश्रय से प्रगट होता है, वह निश्चय सम्यग्ज्ञान है।

अब व्यवहार चारित्र की बात करते हैं। बारह प्रकार का तप एवं तेरह प्रकार का चारित्र – ये सब शुभराग हैं, व्यवहार चारित्र है। अशुभ से बचने के लिए ऐसे शुभ मुनियों को आते हैं। जब तक पूर्ण वीतरागता नहीं होती, तब तक शुभ विकल्प आये बिना नहीं रहता। जब धर्मी जीव शुद्ध चैतन्य स्वभाव की प्रतीतिपूर्वक स्वज्ञेय का अनुभव करते हैं, तब उस तत्व को बताने वाले सच्चे देव–शास्त्र–गुरु के प्रति उन धर्मी जीवों को प्रमोद आये बिना नहीं रहता।

यदि कोई कहे कि हमें राग वाली भूमिका है, तो भी सच्चे देव–शास्त्र–गुरु के प्रति एवं उनकी प्रतिमा वगैरह के प्रति उल्लास नहीं आता, तो यह बात झूठ है। धर्मी को धर्म के समान ही धर्मायतनों के प्रति राग (उल्लास) आता ही है, आना ही चाहिए। उल्लास आये और धर्म माने तो यह भी गलत है; क्योंकि उसने शुभभाव में धर्म माना; जबकि धर्म तो वीतराग भाव रूप है, राग रूप नहीं।

इसप्रकार व्यवहार मोक्षमार्ग का स्वरूप कहा। ●

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

106 पाँचवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सम्यग्दृष्टि जीवों को तो जहाँ वे खड़े हैं, वहाँ से मोक्ष तक का पूरा मार्ग अत्यन्त स्पष्टरूप से दिखाई देता है; पर अनादिकालीन मिथ्यादृष्टियों को तो सबकुछ घने अंधकार में है। इसलिए उन्हें तो पग-पग पर मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

विकल्पात्मक ज्ञान में एक बार सही निर्णय हो जाने और त्रिकाली ध्रुव निज भगवान आत्मा में अपनापन आ जाने के बाद होनेवाली उग्रतम आत्मरुचि में विशेष प्रकार की योग्यता का परिपाक ही प्रायोग्यलब्धि है।

जब यह सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि जीव उक्त विकल्पात्मक प्रक्रिया से पार होकर निर्विकल्पदशा को प्राप्त करता हुआ करणलब्धि में प्रवेश करता है, तब सम्यग्दर्शन प्राप्त करके ही रहता है।

जिसप्रकार प्लेन में बैठ जाने और उसके रवाना होने के बाद लौटना संभव नहीं होता; उसीप्रकार करणलब्धि में पहुँचने के बाद लौटना संभव नहीं रहता; फिर सम्यग्दर्शन होता ही होता है।

जबतक हम किनारे पर पहुँच कर नाव में से उतर नहीं जाते, तबतक नदी में ही हैं; एक पैर भी नाव में है, तब भी नदी में ही है। उसीप्रकार जबतक जीव करणलब्धि में है, तबतक सम्यक्त्व के सन्मुख ही है, सम्यग्दृष्टि नहीं।

जब नाव पूरी तरह छोड़ दें, तभी पार हुए कहे जावेंगे। उसीप्रकार करणलब्धि का काल पूरा होने पर ही सम्यग्दृष्टि होते हैं।

सम्यग्दृष्टि होने के बाद तो मोक्ष तक का सम्पूर्ण मार्ग एकदम स्पष्ट हो ही जाता है, सबकुछ साफ-साफ दिखाई देता है। अत: अब गुरु की उतनी आवश्यकता नहीं रहती, जितनी पहले थी।

देव-शास्त्र-गुरु का सहयोग तो मुख्यरूप से देशनालब्धि में ही है। यदि हम देशनालब्धि संबंधी प्रक्रिया की उपेक्षा करेंगे, उसे अप्रमाण कहेंगे, उसकी प्रामाणिकता पर संदेह करेंगे, उसे हेय दृष्टि से देखेंगे तो मार्ग से भटक जाने की पूरी-पूरी संभावना है; क्योंकि **संदेह के साथ किये गये प्रयास में वह सामर्थ्य नहीं होती कि वह कार्यसिद्धि में सफलता दिला सके।**

जबतक सात फेरे नहीं पड़े, तबतक जमाई के स्वागत-सत्कार की, संभाल की अधिक आवश्यकता है। उसीप्रकार **देशनालब्धि के काल में देव-शास्त्र-गुरु के प्रति आस्था-भक्ति की अधिक आवश्यकता है।**

सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र प्रगट होते ही तो यह आत्मा द्रुतगति से मुक्ति के मार्ग में बढ़ने लगता है; प्रतिसमय शुद्धि की वृद्धिरूप निर्जरा आरंभ हो जाती है। वह शुद्धि की वृद्धि सोते, खाते-पीते, उठते-बैठते चलती रहती है; मोक्षमार्ग में गमन निरन्तर होता ही रहता है।

इसलिए मैं कहता हूँ कि सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र होने के बाद तो स्वयंचालित प्रक्रिया चल निकलती है; अत: सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति के लिए जो कुछ पुरुषार्थ करना है, वह तो सम्यग्दर्शन होने के पहले ही करना है। कम से कम जहाँ यह अज्ञानी जीव खड़ा है, वहाँ तो देशनालब्धि पूर्वक सम्यक् तत्त्व निर्णय करने का ही पुरुषार्थ करना है।

कलश टीका में तो लिखा है कि **''शुद्धात्मानुभूति मोक्षमार्ग है;इसलिए शुद्धात्मानुभूति के होने पर शास्त्र पढ़ने की कुछ अटक नहीं है।[१]''**

तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रगट होने के बाद शास्त्रों का अध्ययन और गुरुवचनों का श्रवण करने की अनिवार्यता नहीं है; क्योंकि जिस कार्य में इनकी आवश्यकता थी, वह कार्य तो हो चुका है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि सम्यग्दृष्टि ज्ञानी धर्मात्मा जीव शास्त्राध्ययन नहीं करते, गुरु मुख से तत्त्व श्रवण नहीं करते; करते हैं, अवश्य करते हैं; पर कुछ समझने के लिए नहीं, अपितु **अपनी रुचि के पोषण के लिए करते हैं।**

यह बात तो सर्वविदित ही है कि भगवान महावीर के प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को भगवान महावीर की दिव्यध्वनि खिरने के पूर्व ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो गयी थी, वे द्वादशांग के पाठी हो गये थे, उन्हें मन:पर्ययज्ञान हो गया था; तथापि वे प्रतिदिन ७ घंटा और १२ मिनिट तक भगवान महावीर की दिव्यध्वनि में उपस्थित रहते थे, रुचिपूर्वक श्रवण करते थे।

यद्यपि कलश टीका का उक्त कथन सुनकर स्वाध्याय से विरक्त होने की आवश्यकता नहीं है; तथापि इस महासत्य को जानना भी जरूरी है कि **जबतक गौतमस्वामी को दिव्यध्वनि सुनने का विकल्प रहा, तबतक केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। भगवान महावीर के निर्वाण होने पर विकल्प टूटा नहीं कि उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हो गयी।**

जिनवाणी में समागत कथनों को गंभीरता से समझने की आवश्यकता है। प्रत्येक कथन की अपेक्षा को अत्यन्त सावधानीपूर्वक समझना चाहिए, उसका प्रतिपादन भी अत्यन्त सावधानीपूर्वक किये जाने की आवश्यकता है; अन्यथा स्व-पर की हानि होने की संभावना बनी ही रहती है।

(क्रमश:)

१. समयसार कलश १३ की राजमलीय कलश टीका

2 दिसम्बर 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

दिसम्बर 2013 के अंतिम सप्ताह में होने वाली परीक्षाओं का विवरण प्रकाशित किया जा रहा है, अत: सम्बन्धित परीक्षार्थी निम्नानुसार तैयारी करें -

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 2
2. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 3

द्वितीय वर्ष - 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2
2. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
2. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय)
2. नयचक्र-पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
3. हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (6 से 10 अध्याय)
2. नयचक्र-उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय प्रकरण)
3. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

शोक समाचार

1. बापूनगर-जयपुर (राज.) निवासी श्री सुरेन्द्र कुमार जी पाटनी की धर्मपत्नी श्रीमती अरुणा पाटनी का देहावसान दिनांक 15 नवम्बर को हो गया। ज्ञातव्य है कि श्री सुरेन्द्रकुमारजी राजस्थान जैन सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमारजी पाटनी के लघुभ्राता हैं।

2. श्री विनोद कुमार डेवडिया शाहगढ की माताजी **श्रीमती बेनीबाई** धर्मपत्नी स्व. श्री खूबचन्दजी डेवडिया का दिनांक 13 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि श्री विनोदजी डेवड़िया तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि के अध्यक्ष हैं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 201/- रुपये प्राप्त हुये।

3. मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती सन्तोष धर्मपत्नी श्री चन्द्रभूषण जैन महलके वाले का दिनांक 5 अक्टूबर को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 11 हजार रु. प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

अहिंसा अभियान की धूम

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित टोडरमल जैन युवा शास्त्री परिषद के आयोजकत्व में अहिंसा अभियान चलाया गया, जिसके तहत प्राथमिक, माध्यमिक हाईस्कूल तथा हाई सैकण्डरी स्कूलों में पटाखों से होने वाली हानियों के बारे में बताया गया, जिससे प्रेरित होकर अनेक बच्चों ने पटाखे न फोड़ने का संकल्प लिया।

यह अहिंसा अभियान संकुल खड़ैरी के द्वारा गूंगरा, निबौरा, मुहली, बहियागढ, केरवना, पथरिया, सिंहेरा, आलमपुरा, कैथोरा, हनमतघाटी आदि स्थानों पर चलाया गया, जिसमें हस्ताक्षर अभियान, प्रतियोगिताएँ तथा वरिष्ठ लोगों द्वारा पत्रिका का वांचन स्थापन किया गया।

सम्पूर्ण अहिंसा अभियान का संयोजन पण्डित पंकज शास्त्री तथा अंकित कुमार द्वारा किया गया।

हार्दिक बधाई

1. श्रीमती शान्तिदेवी व श्री धन्यकुमार जैन जयपुर वाले सूरत के सुपौत्र **चि. स्नेहिल** का पाणिग्रहण संस्कार श्रीमती अनितादेवी व श्री बाबूलालजी झांझरी इचलकरणजी वालों की सुपुत्री **सौ. प्रीति** के साथ दिनांक 22 अक्टूबर 2012 को लोनावाला (महा.) में संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये एवं मंदिरजी में 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

2. मुशरफ चौक-जौहरी बाजार, जयपुर निवासी श्री आशीष जैन द्वारा अपनी सुपुत्री **कु. अनन्या जैन** के जन्मदिन (3 नवम्बर) के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

3. चि. आकाश जैन पुत्र श्री शैलेश जैन एवं सौ. डोली जैन पुत्री श्री पदम चंद जैन फिरोजाबाद के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 501/- रुपये प्राप्त हुये।

इस अवसर पर जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127